3. भोलाराम का जीव

हरिशंकर परसाई

लेखक परिचय

नई कहानी की अंतर्वस्तु के विस्तार की दृष्टि से अपने समकालीन में हरिशंकर परसाई की अपनी अलग ही पहचान है। उनकी कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को लेकर न कोई उलझाव है और न ही शिल्प की बारीकियों के प्रति कोई विशेष आग्रह। उनकी कहानियाँ इससे अलग हटकर मूल्यगत संक्रमण और स्खलन की प्रवृत्ति को ज्यादा गहरे सरोकार के साथ चित्रित करती हैं। उनकी कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगतियों के प्रति तीखी आलोचनात्मक दृष्टि परिलक्षित होता है। सूक्ष्म व्यंग्य का कुशल प्रयोग परसाई को अन्य रचनाकारों से अलग एक विशिष्ट पहचान देता है। हरिशंकर परसाई अपने रचनाकर्म को सामाजिक दायित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। सच्चे साहित्य के लिए वे सामाजिक अनुभव को ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। अपनी रचनाओं में परसाई अपने आस-पास के जीवन से जुड़कर चलते दिखाई देते हैं। 'मौलाना का लड़का', 'राग-विराग' 'सदाचार का ताबीज', 'भोलाराम का जीव', 'मुंडन', 'एक त्रृप्त आदमी की कहानी', 'मैं हूँ तोता प्रेम का मारा' और 'सत्य साधक मंडल' इनकी चर्चित कहानियाँ हैं जिनमें परसाई की सामाजिक दृष्टि और अंतर्वस्तु की व्यापकता स्पष्ट दिखाई देती है।

धनंजय वर्मा ने लिखा है कि - "उनमें आदमी की चौतरफा आजादी के लिए क्रांतिकारी चेतना स्पंदित है। समाज का क्रांतिकारी परिवर्तन, मनुष्य की मुक्ति, एक बेहतर संसार की रचना - यही वो परिप्रेक्ष्य है जिसमें ये कहानियाँ लिखी गई हैं। उनके पीछे एक जीवन-दर्शन और मूल्य-दृष्टि है।" समकालीन जीवन-यथार्थ का शायद ही कोई पक्ष बचा हो जिसकी विसंगति और अंतर्विरोध को परसाई ने उद्घाटित न किया हो। उन्होंने कहानी के सम्बंध पर विशेष ध्यान न देकर अपनी बात को अधिक पैना और नुकीला बनाकर प्रस्तुत किया है इसीलिए इनके यहाँ व्यंग्य की प्रधानता दिखाई देती है।

'भोलाराम का जीव' हरिशंकर परसाई की एक ऐसी कहानी है जिसमें व्यंग्य की तीखी मार स्पष्ट झलकती है। इस कहानी में सामाजिक विसंगतियों के साथ-साथ प्रशासनिक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार को केन्द्र में रखा गया है। परसाई आसपास के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण सवालों में कहीं ज्यादा रुचि लेते हैं। सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार, लापरवाही और सिफारिश का जो आलम है उसे व्यंग्य-विनोद के सहारे 'भोलाराम का जीव' में अभिव्यक्त किया गया है। भोलाराम का जीव धर्मराज के दरबार में इसलिए नहीं प्रस्तुत हो पाता क्योंकि

वह पेंशन की दरख्वास्तों के बीच कहीं अटका पड़ा है। और दरख्वास्तें छोड़कर स्वर्ग जाना उसे मंजूर नहीं है। भोलाराम की पेंशन की फाइल में दबी दरख्वास्तें इसलिए उड़ गईं क्योंकि उस पर वजन नहीं रखा गया था। यह वजन पेपरवेट के रूप में नहीं हो सकता, क्योंकि इस कहानी में वजन शब्द के इस्तेमाल में जो अर्थ छिपा है उसका सीधा-सा अर्थ है पैसा। धर्मराज के दरबार में लिखा-पढ़ी का काम देखने वाले चित्रगुप्त को अंततः इस सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ा कि, "आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चल रहा है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं।" पर ध्यान देने की बात तो यह है कि जब खुद धर्मराज सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में स्थान 'अलॉट' करने लगे हों तो मृत्युलोक में इन सब कार्य-व्यापारों को होने से कौन रोक सकता है? दरअसल, हमारी समूची व्यवस्था ही भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। राजनीति, समाज, शिक्षा, प्रशासन, न्याय आदि सभी संस्थाएँ भ्रष्टाचार की गिरफ्त में हैं अन्यथा रिटायर होने के पाँच वर्ष बाद भी पेंशन न मिलने का दूसरा कोई कारण क्या हो सकता है। इस कहानी में परसाई ने सिफारिश, मठ, भ्रम, दफ्तर, वजन और गरीबी जैसे कुछ सार्थक शब्दों का सायास प्रयोग किया है। हमारी व्यवस्था का तंत्र इतना निर्मम, अमानवीय और संवेदन शून्य हो चुका है कि उसे यह सोचने की फुरसत नहीं है कि जो आदमी जिन्दगी भर 'भुखमरा' रहा और 'गरीबी की बीमारी' ने जिसके प्राण ही लिए, वह घूस के पैसे कहाँ से लाएगा? 'भोलाराम का जीव' कहानी में यह यथार्थ तल्खी और व्यंग्य के साथ अभिव्यक्त हुआ है। परसाई अपनी कहानियों को तेवर देने के लिए मिथकीय चरित्रों का भी प्रयोग करते हैं। इस कहानी में नारी की एक और प्रवृत्ति उभरकर सामने आती है जहाँ वह पति को नैतिकता और आदर्श समझ बैठती है। लेकिन पति उसके विश्वास की आड़ में तमाम अनर्गल क्रिया कलाप करने की स्वतंत्रता हासिल कर लेता है। स्त्री जाने-अनजाने इसी के परदे में अपनी गृहस्थी में डूब जाती है।

परसाई मूलतः एक व्यंग्यकार हैं। सामाजिक विसंगतियों के प्रति गहरा सरोकार रखने वाला लेखक ही सच्चा व्यंग्यकार हो सकता है। स्थितियों, व्यक्तियों और प्रवृत्तियों पर व्यंग्य करके वह सामाजिक विसंगतियों के प्रति अपना क्षोभ तो प्रकट करता ही है, अपने लेखन से वह समाज में एक नैतिक हस्तक्षेप भी करता है। परसाई के व्यंग्य में गहरी आस्था निहित होती है। इस अवस्था में मनुष्य की बेहतरी की आकांक्षा प्रबल होती है। विसंगतियों के प्रति सारी कटुता के बावजूद उनके चरित्रों में गहरी सहानुभूति परिलक्षित होती है। दरअसल, व्यंग्य का लक्ष्य हास्य पैदा करना नहीं होता, बल्कि इसके मूल में करुणा छिपी होती है। परसाई की रचनाएँ इसका प्रमाण हैं।

हरिशंकर परसाई ने बहुत छोटी-छोटी कहानियाँ लिखी हैं जिनमें कथानक की पुरानी मर्यादाओं का नकार स्पष्ट झलकता है। ये कहानियाँ अपने कथ्य के अनुरूप शिल्प की तलाश खुद कर लेती हैं। इतिहास, पुराण, लोककथा और फैंटेसी का परसाई ने जमकर उपयोग किया है। इस तरह वे अतीत का उपयोग वर्तमान के यथार्थ को उजागर करने के लिए ही करते है। समय का वे रचनात्मक उपयोग करते हैं। उनका समूचा साहित्य वर्तमान से मुठभेड़ करता हुआ दिखाई देता है।

कहानी

ऐसा कभी नहीं हुआ था....

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफ़ारिश के आधार पर स्वर्ग या नर्क में निवास-स्थान 'अलाट' करते आ रहे थे-पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर देख रहे थे। ग़लती पकड़ में ही नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीझ कर रजिस्टर इतने ज़ोर से बन्द किया कि मक्खी चपेट में आ गयी। उसे निकालते हुए वह बोले, 'महाराज, रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।'

धर्मराज ने पूछा, 'और वह दूत कहाँ है?'

'महाराज, वह भी लापता है।'

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बहुत बदहवास-सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, 'अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?'

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, 'दयानिधान, मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।'

धर्मराज क्रोध से बोले, 'मूर्ख, जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।'

दूत ने सिर झुकाकर कहा, "महाराज मेरी सावधानी में बिल्कुल क़सर नहीं थी। मेरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।'

चित्रगुप्त ने कहा, 'महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चल रहा है।

लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वे रास्ते में ही रेलवेवाले उड़ा लेते हैं। हौज़री के पार्सलों के मोज़े रेलवे-अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे-के-डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद भी ख़राबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?'

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा, 'तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी। भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना?'

इसी समय कहीं से घूमते-फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले, 'क्यों धर्मराज, कैसे चिंतित बैठे हैं? क्या नर्क में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?'

धर्मराज ने कहा, 'वहाँ की समस्या तो कभी की हल हो गयी, मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसियर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाज़री भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गये ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गयी। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था, कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जायेगा।'

नारद ने पूछा, 'उस पर इन्कम-टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।'

चित्रगुप्त ने कहा, 'इन्कम होती तो टैक्स होता..... भुखमरा था

नारद बोले, 'मामला दिलचस्प है। अच्छा, मुझे उसका नाम-पता तो बतलाओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।'

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया, 'भोलाराम नाम था उसका। जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार-समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग साठ साल। सरकारी नौकर था, पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं

दिया था, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान-मालिक, वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया हो। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफ़ी घूमना पड़ेगा।'

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गये।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगायी, 'नारायण....नारायण।' लड़की ने देखकर कहा, 'आगे जाओ, महाराज।'

नारद ने कहा, 'मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को ज़रा बाहर भेजो, बेटी!'

भोलाराम की पत्नी बाहर आयी। नारद ने कहा, 'माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?'

'क्या बताऊँ? ग़रीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गये, पेन्शन पर बैठे, पर पेन्शन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख़ास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेन्शन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेचकर हम लोग खा गये। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फ़ाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।'

नारद ने कहा, 'क्या करोगी, माँ?.....उनकी इतनी ही उम्र थी।'

'ऐसा तो मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रूपया महीना पेन्शन मिलती, तो कुछ और काम कहीं करके गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गये और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।'

दुख की कथा सुनने की फ़ुरसत नारद को थी नहीं। वह अपने मुद्दे पर आये, 'माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?'

पत्नी बोली, 'लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होता है।'

'नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, किसी स्त्री.....'

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, 'बको मत, महाराज। तुम साधु हो, कोई लुच्चे-लफ़ंगे नहीं हो। जिन्दगी-भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर भी नहीं देखा।'

नारद हँसकर बोले, 'हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही भ्रम हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता, मैं चला।'

स्त्री ने कहा, 'महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेन्शन मिल जाये। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाएगा।'

नारद को दया आ गयी थी। वह कहने लगे, 'साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ़्तर में जाकर कोशिश करूँगा।

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ़्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, 'भोलाराम ने दरखास्तें तो भेजीं थीं, पर उन पर वज़न नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गयी होंगी।'

नारद ने कहा, 'भई, ये बहुत से पेपरवेट तो रखे हैं। इन्हें क्यों नहीं रख दिया?'

बाबू हँसा, 'आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख़्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं..... खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।'

नारद उस बाबू के पास गये। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफ़सरों के पास घूम आये, तब एक चपरासी ने कहा, 'महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गये। अगर आप साल-भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा।'

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। उन्हें बिना विजिटिंग कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए। बोले, 'इसे कोई मन्दिर-वन्दिर समझ लिया है क्या? घड़घड़ाते चले आए। चिट क्यों नहीं भेजी?'

नारद ने कहा, 'कैसे भेजता? चपरासी सो रहा है।'

'क्या काम है?' साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेन्शन-केस बतलाया।

साहब बोले, 'आप हैं वैरागी, दफ़्तरों के रीति-रिवाज़ नहीं जानते। असल में भोलाराम ने ग़लती की। भई, यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी

पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख़्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वज़न रखिये।'

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वज़न की समस्या खड़ी हो गयी। साहब बोले, 'भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेन्शन का केस बीसों दफ़्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। बीसों बार एक ही बात को बीस जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेन्शन मिलती है उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है, मगर....' साहब रुके।

नारद ने कहा, 'मगर क्या?'

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, 'मगर वज़न चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरख़्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना-बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधुओं की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं। लड़की जल्दी संगीत सीख गयी, तो उसकी शादी हो जायेगी।'

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर ज़रा घबराए, पर फिर सँभलकर उन्होंने वीणा टेबल पर रखकर कहा, 'यह लीजिए। अब ज़रा जल्दी उसकी पेन्शन का आर्डर निकाल दीजिए।'

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजायी। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, 'बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।'

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख़्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेन्शन के काग़जात भी थे। साहब ने फाइल पर का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, 'क्या नाम बताया, साधु जी, आपने?'

नारद ने समझा कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए ज़ोर से बोले, 'भोलाराम।'

सहसा फाइल में से आवाज आयी, 'कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या? पेन्शन का आर्डर आ गया।'

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गये। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये, बोले, 'भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?'

'हाँ', आवाज़ आयी।

नारद ने कहा, 'मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इन्तज़ार हो रहा है।'

आवाज़ आयी, 'मुझे नहीं जाना। मैं तो पेन्शन की दरख़्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख़्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।'